श्री महाराज जी के श्री मुख वाक्य

गम खाने की चीज़ है,
क्रोध पीने की चीज़ है,
सुख देने की चीज़ है,
दु:ख सहने की चीज़ है,
प्रेम करने की चीज़ है,
पाप छोड़ने की चीज़ है।

जहां अपेक्षायें होंगी वहीं अशान्ति होगी।

सेवा व्यक्ति की नहीं - जो उसमें बैठा है उसकी सेवा करो। नर में नारायण की सेवा वास्तव में सेवा है।

हृदय से सेवा की जाती है तो वह उपमातीत है—वह आपको परमात्मा के व्यक्त रुप के दर्शनों का अधिकारी बना देती है।

निष्कामता गुरु कृपा व परमात्मा की कृपा
का पात्र बनाती है।

मानव योनि दुर्लभ–परमात्मा के पास इससे better कुछ देने को नहीं, इसके माध्यम से उसे पा सकते हो, the best possible He could give – सर्वोत्कृष्ट दिया है।

भक्ति और मुक्ति केवल मानव योनि में ही सम्भव है।
मानव योनि सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही मिली है।

विश्वास क्या है?

प्रेम व भक्ति की नींव है।

भगवान् के लिए जो शास्त्र में पढ़ा और गुरु से सुना-
उसको अक्षरशः स्वीकार करना विश्वास है।

तू सब कुछ है मैं कुछ नहीं,
सब कुछ तेरा है, मेरा कुछ नहीं।

परमात्मा कृपा सुरुप है—**He is made of Grace.**

परमात्मा का बन्दा तो ऐसा हो जो दूसरों को सुख ही सुख दे, चाहे स्वयं दुःख सहे।

परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के अनुसार—

‘‘मैंने जिन्दगी में एक ही चीज़ का पालन किया, मेरे कारण किसी को दुःख न हो।’’

कोई समस्या आती है तो उसका कारण ढूंढने का प्रयत्न करो,
फिर निराकरण करो, उपचार हो जायेगा।

मैं और मेरा बन्धन का कारण,
तू और तेरा मोक्ष का साधन।

जीवन साधनामय हो जाये तो जीवन संघर्ष नहीं रहता।
सुखी जीवन जीने का मन्त्र-
सहन करो, धैर्य को धारो

परमात्मा ने हरेक को प्रेम का गुण दिया है इसका सदुपयोग मानव ही कर सकता है।

तुझ में राम, मुझ में राम,
सब में राम समाया है।
फिर न जाने किस मूर्ख ने,
लड़ना हमें सिखाया है।

जो परमात्मा से युक्त-भक्त
जो परमात्मा से अयुक्त-संसारी

जो संसार को प्रमुखता देता है वह संसारी,
जो परमेश्वर को प्रमुखता देता है वह भक्त।

भक्त संसार रुपी चक्की में पिसता नहीं,
संसारी पिसता रहता है।
यदि प्रेम संसार से तो दुर्गति देगा,
यही प्रेम परमात्मा से तो मोक्ष देगा।

अपनी जिन्दगी संवार लीजिए, उस एक के साथ जुड़कर ।

परमात्मा की हां में हां मिलाना ही उच्च कोटि की भक्ति है, यह मामूली बात नहीं ।
उसकी इच्छा में प्रसन्न रहना जो आप कर रहे हो वही सही है। No Question

तू सब कुछ है मैं कुछ नहीं,
सब कुछ तेरा है मेरा कुछ नहीं।

घटना घोर घटे जिस बेर,
दुर्जन दुखड़े लेवें घेर।
जपिए राम-नाम बिन देर,
रखिए राम-राम शुभ टेर।।

घटना घोर घटने पर क्या आपको राम नाम याद आता है।
हमारा मार्ग मात्र सुनने व पढ़ने का नहीं है,
करने का मार्ग है, कीजियेगा।

श्री रामशरणम् prepration अर्थात परीक्षा की तैयारी का स्थान है परीक्षा तो घर में जाकर होगी।

How you react & How you behave there.

सत्कर्मों का बीज जब अन्तकरण की भूमि में बोया जाता है, तो प्रशंसा रुपी पानी बरसता है जिससे अभिमान रुपी unwanted घास उगती है। यदि साधक समझदार नहीं है, मूर्ख है, इसे काटता नहीं है, तो यह घास बढ़ती जाती है। इसे काटो या कटवाओ। ये कांटेदार झाड़ियां पीड़ा भी देती है और उलझा कर भी रख देती है।

I have yet to see a person जिसे प्रशंसा मिली हो और अभिमान न हुआ हो। तुलसीदास जी के अनुसार-

मैंने ऐसा मनुष्य नहीं देखा
जिसे पद मिला हो, उसे मद न हुआ हो।